Date 23/04/202. TEACHING OF SCIENCE D.El.Ed. IInd Sem

Topic- मृदा तथा परागण Period- IIIrd

मृदा अपरदन (भू- क्षरण) ⇒

मिट्टी के कणों के अपने स्थान से हटने की प्रक्रिया को मृदा अपरदन कहते है।

मृदा अपरदन प्रमुख रूप से दो प्रकार का होता है-

1- **परत अपरदन** ⇒

जब मिट्टी की सतही परत तेज वायु या भारी वर्षा से उड़ने या बहने के कारण अपने स्थान से हटने की स्थिति में आ जाती है तो यह परत अपरदन कहलाता है।

2 - **अवनालिका अपरदन** ⇒

जहा भूमि ढालू होती है वहा जल के बहाव से लम्बी संकरी नालिया निर्मित हो जाती है। इसे अवनालिकाएँ कहा जाता है। इन नलिकाओ मे जल के साथ मिट्टी भी बहती है। अतः इस प्रकार से भूमि का एक स्थान से निरिक्षतीकरण होता है। इसे अवनालिका अपरदन कहते है।

⇒ मृदा अपरदन को प्रभावित करने वाले कारक ⇒

मृदा अपरदन निम्नलिखित कारणो से होता है-

1 ⇒ वर्षा की अधिकता

2 ⇒ तीव्र हवाएँ

3 ⇒ तापमान मे परिवर्तन

Scanned with CamScanner

4 = भूमि का ढाल

5 = कणों की कमी

6 = पशुओं के चरने से

7 = परत कटाव

8 = मानवीय क्रियाएँ

⇒ मृदा के प्रकार (Types of Soil) ⇒

रंग, बनावट तथा अवयवों के आधार पर भारत में पाई जाने वाली मृदा छः प्रकार की होती है।

1 ⇒ लाल मृदा (Red Soil)

2 ⇒ काली मृदा (Black Soil)

3 ⇒ जलोढ़ मृदा (Alluvial Soil)

4 ⇒ रेतीली मृदा (Desert Soil)

5 - पर्वतीय मृदा (Mountain Soil)

6 ⇒ लाल दोमदार मृदा (Laterite Soil)

⇒ मृदा का प्रयोग ⇒

मृदा में बहुगुण होने के कारण इसका प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में होता है।

1 ⇒ कृषि

2 - निर्माण

3 = मिट्टी के बर्तन

4 ⇒ औषधि

5 ⇒ सौन्दर्य उत्पाद

Continue

23/4/2020

Scanned with CamScanner